सत्यमेव जयते

भाकृअनुप
ICAR

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

हिन्दी चेतना मास, 2013

संदेश

हमारा देश एक बहुभाषी देश है। कई राज्यों की भाषा और बोलियां अलग-अलग हैं, जो वहां के लोगों के विचार और अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। इनमें से 22 भाषाओं को भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त है। परन्तु देश में संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी सर्वाधिक लोकप्रिय है, क्योंकि इसके बोलने और समझने वालों की संख्या सबसे अधिक है। इसलिए 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

हिन्दी जिस तेजी से आगे बढ़ रही है इससे यह आशा जगती है कि हिन्दी शीघ्र ही विश्व और संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनेगी। इसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए इस भूमंडलीकरण के युग में भारत में हिन्दी का जो रूप होगा विश्व में भी वैसा ही रूप होगा। वैज्ञानिक क्रांति के इस युग में मानव की आवश्यकताएं अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक फैलती जा रही हैं। इसमें हिन्दी की भूमिका भी अहम है।

सरकारी कार्य में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है लेकिन अभी भी अपेक्षित प्रगति से हम काफी पीछे हैं। हिन्दी को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए देश के सरकारी काम-काज में इसका प्रयोग निश्चित रूप से बढ़ाना होगा। कृषि हमारी अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का यह उत्तरदायित्व है कि वह नए-नए अनुसंधान कार्यों और प्रौद्योगिकियों की जानकारी समय रहते किसानों व देश के आम जनों तक उनकी भाषा में पहुंचाते हुए राष्ट्रीय विकास को गति प्रदान करे।

मैं परिषद मुख्यालय व इसके अधीनस्थ सभी संस्थानों/निदेशालयों/ब्यूरो/केन्द्रों तथा क्षेत्रीय केन्द्रों के प्रमुखों से आह्वान करता हूँ कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु ठोस कदम उठाएं। विशेष रूप से कार्यालयों में हिन्दी में मूल टिप्पण व पत्राचार को प्रोत्साहित किए जाने पर ध्यान दिया जाए। सरल एवं सहज हिन्दी का प्रयोग कृषि उपलब्धियों के प्रचार में सहायक सिद्ध होगा।

आइए, हम सब मिलकर हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने में अपना योगदान दें। मैं, हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/मास के सफल आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(शरद पवार)

कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री

भारत सरकार